SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-04| June- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI: - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.80

# महाकवि बाणभट्ट के गद्यकाव्यों में ललित कलाओं का सांस्कृतिक एवं सौन्दर्यशास्त्रीय स्वरूप

**डॉ.शालिनी सिंह[1], सरोजिनी बघेल[2]**

[1]शोध निर्देशक, संस्कृत विभाग, भारती विश्वविद्यालय दुर्ग (छत्तीसगढ़)

[2]शोधार्थिनी, संस्कृत, भारती विश्वविद्यालय दुर्ग (छत्तीसगढ़)

**सारांश**

*संस्कृतवाङ्मयस्य समृद्धपरम्परायां महाकविः बाणभट्टः गद्यकाव्यपरम्परायाः अप्रतिमः रचनाकारः अस्ति। तस्य कादम्बरी तथा हर्षचरितम् इति द्वे गद्यकाव्ये न केवलं कथावस्तुनः सौन्दर्यं प्रकाशयतः, अपितु तत्कालीनभारतीयसमाजस्य सांस्कृतिकजीवनं, कलाबोधं, सौन्दर्यदृष्टिं च सजीवं चित्रयतः। बाणस्य काव्यदृष्टौ सङ्गीतम्, वाद्यम्, नृत्यम्, चित्रकला, वास्तुकला, शिल्पम्, अलङ्कारः, प्रसाधनम्, उद्यानरचना तथा प्रकृतिसौन्दर्यम् इत्यादीनां कलानां विशिष्टं स्थानम् अस्ति।कादम्बरी में राजप्रासाद, उद्यान, रत्नभित्ति, मणिस्तम्भ, वीणा, आभूषण, सुगन्ध, पुष्प तथा स्त्री-सौन्दर्य के अत्यन्त सूक्ष्म वर्णन मिलते हैं। हर्षचरितम् में राजसभा, राजकीय वैभव, नगरजीवन, आश्रम, सैन्यजीवन तथा सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से कला और संस्कृति का व्यापक रूप प्रस्तुत हुआ है। बाणभट्ट की वर्णनशक्ति में शब्दचित्रणम्, ध्वनिसौन्दर्यम्, अलङ्कारवैचित्र्यम् तथा रसाभिव्यक्तिः का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य बाणभट्ट के गद्यकाव्यों में ललितकलाओं के सांस्कृतिक एवं सौन्दर्यशास्त्रीय स्वरूप का विवेचन करना है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि बाण के लिए कला केवल मनोरञ्जनस्य साधनं नास्ति, अपितु सा संस्कृतेः अभिव्यक्तिः, सामाजिकप्रतिष्ठायाः सूचकः, भावानां माध्यमम् तथा सौन्दर्यानुभूतेः आधारः अस्ति। अतः बाणभट्ट का गद्य भारतीय कलाचेतना एवं सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्रोत है।*

**मुख्य शब्द-बाणभट्ट, गद्यकाव्यम्, कादम्बरी, हर्षचरितम्, ललितकलाः, सङ्गीतम्, नृत्यम्, चित्रकला, वास्तुकला, अलङ्कारः, सौन्दर्यशास्त्रम्, सांस्कृतिकचेतना।**

## प्रस्तावना

भारतीयसाहित्यपरम्परायां साहित्यं केवलं मनोरञ्जनस्य साधनं न मन्यते, अपितु तत् जीवनस्य कलात्मकं प्रतिबिम्बम् इति स्वीकृतम्। मनुष्यस्य अनुभूतयः, सामाजिकसम्बन्धाः, धार्मिकविश्वासाः, सांस्कृतिकसंस्काराः, कलारुचयः तथा सौन्दर्यबोधः साहित्ये विविधरूपेण अभिव्यक्तिं प्राप्नुवन्ति। अत एव भारतीय काव्यशास्त्रपरम्परायां काव्यस्य प्रयोजनं केवलं आनन्दप्रदानं न, अपितु यशः, अर्थः, व्यवहारज्ञानम्, शिवत्वम् तथा उपदेशः इत्यादिभिः सह सम्बद्धं मन्यते।आचार्य मम्मटेन काव्यप्रयोजनस्य प्रसिद्धं सूत्रं प्रतिपादितम्-

**“काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।**

**सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥"**

अस्य भावः अस्ति यत् काव्यं यशः, अर्थः, व्यवहारज्ञानम्, अमङ्गलनिवारणम्, सद्य आनन्दः तथा प्रियतमाया इव मधुरोपदेशं प्रददाति। अतः काव्यं समाजजीवनात् पृथक् न भवति।संस्कृतगद्यकाव्यस्य परम्परायां महाकविना बाणभट्टेन विशिष्टं स्थानं प्राप्तम्। तस्य हर्षचरितम् तथा कादम्बरी इति द्वे कृत्यौ संस्कृतगद्यस्य चरमोत्कर्षस्य निदर्शने स्तः। बाणभट्टः सप्तमशताब्द्यां हर्षवर्धनस्य राजसभायां प्रतिष्ठितः आसीत्। हर्षवर्धनस्य राज्यकालः सामान्यतः ६०६ ईस्वी से 648 ईस्वी तक माना जाता है और इसी कारण बाणभट्ट का काल भी सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध से जोड़ा जाता है।बाणभट्टस्य साहित्ये वर्णनकला सर्वाधिक उल्लेखनीय अस्ति। सः केवलं वस्तुनः नाम न कथयति, अपितु तस्य रूपं, गन्धं, वर्णं, ध्वनिं, गतिं तथा भावात्मकप्रभावं च शब्दैः मूर्तरूपेण प्रस्तुतयति। अतः तस्य गद्यं पठन् सहृदयः केवलं कथां न पठति, अपितु दृश्यं पश्यति, ध्वनिं शृणोति, सुगन्धं अनुभवति तथा भावं रसयति।बाणभट्टस्य कादम्बरी कथाप्रधानं गद्यकाव्यम् अस्ति। संस्कृतगद्यकाव्ये कथा तथा आख्यायिका इति द्वौ प्रमुखौ भेदौ स्वीकृतौ स्तः। बाणभट्टस्य कादम्बरी कथा तथा हर्षचरितम् आख्यायिका इति परम्परायां प्रसिद्धम्।कादम्बरी का आरम्भ ही अत्यन्त कलात्मक मंगलाचरण से होता है-

**"रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये**

**स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे।**

**अजाय सर्गस्थितिनाशहेतवे**

**त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः॥"**

अत्र ब्रह्मणः त्रिगुणात्मकस्वरूपस्य कलात्मकं निरूपणं दृश्यते। शब्दविन्यासः, छन्दः, अनुप्रासः तथा दार्शनिकभावना-सर्वे मिलित्वा सौन्दर्यस्य समन्वितं रूपं निर्मान्ति। मूल संस्कृत पाठ में यह मंगलाचरण कादम्बरी के आरम्भ में प्राप्त होता है।बाणभट्टस्य साहित्ये ललितकलानां स्वरूपं बहुविधम् अस्ति। सङ्गीतम् भावाभिव्यक्तेः साधनम्, वाद्यम् श्रवणसौन्दर्यस्य माध्यमम्, नृत्यम् शरीरगतिभिः भावानां अभिव्यक्तिः, चित्रकला दृश्यसौन्दर्यस्य स्थायिरूपम्, वास्तुकला सामाजिकवैभवस्य प्रतीकः, शिल्पकला सृजनात्मकप्रतिभायाः परिचायकः तथा अलङ्कारकला मानवीय-सौन्दर्यस्य संवर्धिका भवति।कादम्बरी में वीणा-वादन का स्पष्ट संकेत मिलता है। एक प्रसंग में-

**"तस्या एव वीणावाहकः केयूरकः कथयिष्यति।"**

**इति उल्लेखः प्राप्तः।**

यहाँ वीणावाद्यस्य उल्लेख मात्रं नास्ति, इससे यह भी स्पष्ट होता है कि संगीतकार या वीणावादक राजकीय-सांस्कृतिक जीवन का अंग था। उपलब्ध संस्कृत-हिन्दी संस्करण में यह प्रसंग पृष्ठ 561 पर प्राप्त होता है।बाणभट्ट के वर्णनों में स्थापत्य एवं अलंकरण की कला भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। "रत्नभित्तिः", "मणिस्तम्भः" जैसे पद राजप्रासादस्य वैभवपूर्णं स्वरूपं प्रस्तुत करते हैं। रत्नमय भित्ति में प्रतिबिम्बित शरीर की कल्पना दृश्य-सौन्दर्य को और अधिक प्रभावशाली बनाती है। इस प्रकार वास्तु केवल निवास का साधन न रहकर दृश्य-कला का रूप ग्रहण कर लेती है।बाणस्य उद्यानवर्णने अपि कलात्मकता दृश्यते। पुष्प, लता, सुगन्धितजल, जलाशय, रत्नबालुका तथा स्वर्णिम स्थापत्य आदि के संयोजन से कवि एक ऐसा दृश्य निर्मित करता है जो चित्रकला तथा वास्तुकला के संयुक्त रूप जैसा प्रतीत होता है।बाणभट्ट के लिए प्रकृति भी एक प्रकार की ललितकला है। वनम्, सरः, पर्वतः, लता, पुष्पम्, पक्षिणः, चन्द्रः, सूर्यः तथा ऋतवः-ये सभी उनकी काव्यदृष्टि में सौन्दर्य के सक्रिय तत्त्व बन जाते हैं। विन्ध्याटवी के वर्णन में प्रकृति की विशालता, रहस्यात्मकता तथा भयमिश्रित सौन्दर्य का अद्भुत संयोजन मिलता है। कादम्बरी के उपलब्ध संस्करण में विन्ध्याटवी, पम्पासरोवर तथा जाबालि-आश्रम का वर्णन पृष्ठ 104 से आरम्भ होता है। स्त्री-सौन्दर्य के वर्णन में केशरचना, कुङ्कुम, चन्दन, आभरण, मणि, हार, केयूर, नूपुर आदि का प्रयोग मिलता है। इससे तत्कालीन उच्चवर्गीय जीवन की सौन्दर्यचेतना एवं प्रसाधनपरम्परा का परिचय मिलता है।बाणभट्ट की कला-दृष्टि केवल बाह्यसौन्दर्यपरक नहीं है। उसमें रस, भाव, ध्वनि, औचित्य तथा अलंकार का भी महत्त्व है। श्रृङ्गाररस के प्रसंगों में प्रकृति और मानव-सौन्दर्य का सामंजस्य, करुण प्रसंगों में

© Shiksha Samvad | Received: 10 June -2026 | Accepted: 15 June - 2026 | Published:20 June - 2026

वातावरण की म्लानता तथा वीर प्रसंगों में राजकीय एवं सैन्य वैभव-ये सभी भावानुकूल सौन्दर्यरचना के उदाहरण हैं।हर्षचरितम् में भी कला एवं संस्कृति का व्यापक संसार मिलता है। राजसभा, राजप्रासाद, उत्सव, सैनिक शिविर, आश्रम, नगर तथा ग्रामजीवन के वर्णनों में तत्कालीन सांस्कृतिक व्यवस्था की झलक दिखाई देती है। आधुनिक सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययनों में हर्षचरित को सप्तमशती के सामाजिक जीवन के अध्ययन के लिए उपयोगी स्रोत माना गया है; संगीत, नृत्य और वाद्य के सम्बन्ध में भी उसमें महत्त्वपूर्ण संकेतों की चर्चा की गई है। बाणभट्ट के गद्यकाव्यों में ललितकलाओं का अध्ययन केवल कला-इतिहास का विषय नहीं है। यह सांस्कृतिकइतिहासस्य, समाजशास्त्रस्य, सौन्दर्यशास्त्रस्य तथा साहित्यशास्त्रस्य संयुक्त अध्ययन का विषय है। बाणभट्ट के गद्यकाव्यों में ललित कलाएँ किस प्रकार सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक प्रतिष्ठा, भावाभिव्यक्ति, रसनिष्पत्ति तथा सौन्दर्यानुभूति की वाहक बनती हैं। साथ ही यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि बाणभट्ट की वर्णनात्मक शैली किस प्रकार शब्दों को चित्र, ध्वनि को संगीत और भाव को रस में परिवर्तित कर देती है।

**बाणभट्ट के गद्यकाव्यों में ललित कलाओं का सांस्कृतिक स्वरूप**

बाणभट्टस्य काव्यदृष्टौ कला जीवनस्य अभिन्नम् अङ्गम् अस्ति। तस्य कादम्बरी तथा हर्षचरितम् इत्येतयोः कृत्योः कला केवलं राजकीयवैभवस्य प्रदर्शनं नास्ति, अपितु सा तत्कालीनसमाजस्य सांस्कृतिकचेतनां प्रकाशयति।भारतीयसंस्कृतौ सङ्गीतस्य महत्त्वं प्राचीनकालादेव स्वीकृतम्। बाणभट्ट के साहित्य में वीणा, स्वर, श्रुति, गीत, वाद्य आदि का उल्लेख इस सांस्कृतिक परम्परा का प्रमाण है। कादम्बरी में "वीणावाहकः केयूरकः" इति पदप्रयोग संगीत-परम्परा की ओर संकेत करता है।सङ्गीतं केवलं श्रवणानन्दस्य साधनं नास्ति। भारतीयदृष्ट्या संगीतं भावानां संचारकं भवति। विरहिणी के लिए संगीत करुणभाव को तीव्र करता है, प्रेमी के लिए शृङ्गारभाव को, तथा उत्सव में हर्षभाव को विकसित करता है।बाणभट्ट के यहाँ ध्वनि-सौन्दर्य भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उनके दीर्घसमासयुक्त वाक्यों में अनुप्रास एवं वर्णविन्यास से एक प्रकार की गद्यलय उत्पन्न होती है। अतः बाण का गद्य स्वयं एक प्रकार का शब्दसंगीतम् बन जाता है।

नृत्य भारतीय ललितकलाओं मेंआङ्गिकाभिनयस्य महत्त्वपूर्ण माध्यम है। नृत्य में शरीर की गति, नेत्रों की चेष्टा, हस्तमुद्रा तथा मुखाभिनय के माध्यम से भाव व्यक्त होते हैं। बाणभट्ट के राजकीय एवं सांस्कृतिक वातावरण में नृत्य मनोरञ्जन तथा उत्सव का अंग रहा होगा-ऐसे संकेत उनके सांस्कृतिक चित्रण में मिलते हैं।नृत्यस्य मूलस्वरूपं "अङ्गिकाभिनयः" इति कथयितुं शक्यते। नृत्य के माध्यम से जो भाव शब्दों से व्यक्त नहीं होते, वे शरीरगतियों द्वारा अभिव्यक्त होते हैं। इसीलिए नृत्य और काव्य दोनों का अन्तिम उद्देश्य भावाभिव्यक्तिः है।

बाणभट्ट के गद्य में चित्रात्मकता सर्वाधिक प्रभावशाली तत्त्वों में से एक है। उनकी भाषा स्वयं चित्रकारस्य तुलिका के समान कार्य करती है।राजप्रासाद की रत्नमयी भित्तियाँ, प्रतिबिम्ब, पुष्प, जल, मणि, वस्त्र तथा आभूषणों के वर्णन में रंग और प्रकाश का ऐसा संयोजन दिखाई देता है कि पाठक के सामने दृश्य सजीव हो उठता है।

"रत्नभित्तिपतितमात्मप्रतिबिम्बम्..."यहाँ

प्रतिबिम्ब केवल दृश्य नहीं है, वह प्रकाश, रत्न और मानव-रूप के त्रिवेणी-सौन्दर्य का प्रतीक है।बाणभट्ट के साहित्य में मणिस्तम्भः, रत्नभित्तिः, प्रासादः, तोरणम्, मण्डपः, दीर्घिका आदि स्थापत्य-संबंधी पदों का प्रयोग तत्कालीन वास्तु-संस्कृति की ओर संकेत करता है।वास्तुकला यहाँ केवल उपयोगिता की वस्तु नहीं है। राजप्रासाद का आकार, उसकी सामग्री, रत्न-सज्जा, स्तम्भ, जलाशय तथा उद्यान-सभी मिलकर राजकीय ऐश्वर्यम् तथा सामाजिकप्रतिष्ठाम् व्यक्त करते हैं।इस दृष्टि से प्रासाद एक प्रकार का सामाजिक प्रतीक बन जाता है। जिस प्रकार मुकुट राजा की सत्ता का प्रतीक है, उसी प्रकार रत्नमय प्रासाद उसकी समृद्धि का।बाणभट्ट के नारी-वर्णन में केयूर, कुण्डल, हार, नूपुर, मणि, कुङ्कुम, चन्दन, पुष्पमाला आदि का प्रयोग मिलता है। ये केवल सौन्दर्यवर्धक वस्तुएँ नहीं, अपितु सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक संस्कार और सौन्दर्यबोध के द्योतक हैं।भारतीय सौन्दर्यपरम्परा में शरीर

स्वयं एक प्रकार का कलात्मक क्षेत्र माना गया। केशविन्यास, वस्त्रविन्यास, आभूषण तथा प्रसाधन के माध्यम से नारी के व्यक्तित्व को सांस्कृतिक रूप दिया जाता था।

बाणभट्ट के यहाँ उद्यान स्वयं प्रकृतिनिर्मित कला के रूप में उपस्थित है। पुष्पों की व्यवस्था, लताओं की शोभा, जलाशयों की रचना तथा सुगन्धित वातावरण-ये सब मिलकर उद्यानसौन्दर्यम् का निर्माण करते हैं। बाणभट्ट की सांस्कृतिक दृष्टि में प्रकृति और मानवकला का अद्भुत समन्वय है। मनुष्य प्रकृति का अनुकरण करके उद्यान बनाता है और प्रकृति स्वयं कलाकार की भाँति रंग, गन्ध तथा आकार प्रदान करती है।बाणभट्टस्य सौन्दर्यदृष्टेः मूलाधारः रसः, भावः, अलङ्कारः, ध्वनिः तथा रीतिः इत्येतेषु तत्त्वेषु निहितः अस्ति। उनके गद्य का सौन्दर्य केवल शब्दों की कठिनता में नहीं, शब्द और अर्थ के सामञ्जस्य में निहित है।आचार्य भरत ने रस को काव्य की आत्मानुभूति से जोड़ा। परवर्ती आचार्यों ने भी रस को काव्यस्य प्राणभूत तत्त्व माना। बाणभट्ट के यहाँ शृङ्गार, करुण, वीर, अद्भुत तथा भयानक आदि रसों की अभिव्यक्ति में ललित कलाओं का विशेष योगदान है।कादम्बरी मूलतः प्रेमप्रधान कथा है। अतः शृङ्गाररसः इसका प्रमुख भावात्मक आधार है। नायिका का रूप, पुष्प, चन्दन, सुगन्ध, संगीत, उद्यान, चन्द्रप्रकाश तथा जलाशय-ये सभी शृङ्गारिक वातावरण का निर्माण करते हैं।यहाँ कला बाह्य सज्जा न रहकर भाववातावरणस्य निर्माणसाधनम् बन जाती है।

बाणभट्ट की प्रकृति मानवीय भावों के साथ चलती है। विरह के समय प्रकृति म्लान प्रतीत होती है, मिलन के समय रमणीय और उत्सव के समय उल्लासपूर्ण।अतः-**"प्रकृतिरपि भावानुगामिनी भवति।"**बाणभट्ट के प्रकृति-वर्णन में यही विशेषता दृष्टिगोचर होती है।बाणभट्ट के गद्य की सबसे बड़ी विशेषता शब्दचित्रम् है। वे शब्दों से दृश्य बनाते हैं। उनके दीर्घसमासों में अनेक विशेषण एक-दूसरे से जुड़ते हुए किसी चित्रकार की रंग-परतों के समान कार्य करते हैं।उनकी भाषा में अनुप्रासः, उपमा, रूपकम्, उत्प्रेक्षा, श्लेषः, अतिशयोक्तिः आदि अलङ्कारों का व्यापक प्रयोग मिलता है।उदाहरणतः कादम्बरी के मंगलाचरण में-

**"रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये**

**स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे।"**

यहाँ रजस्-सत्त्व-तमस् के क्रम से सृष्टि, स्थिति एवं प्रलय की दार्शनिक अवधारणा को काव्यात्मक रूप दिया गया है।बाणभट्ट के यहाँ किसी दृश्य का वर्णन केवल दृश्य नहीं रहता। वह क्रमशः भाव, फिर रस में परिवर्तित होता है।उदाहरणतः रत्नमय प्रासाद ⟶ दृश्यवैभव ⟶ राजकीय ऐश्वर्य ⟶ आश्चर्य ⟶ अद्भुतरस।इसी प्रकार पुष्पित उद्यान ⟶ सुगन्ध ⟶ नायिका ⟶ प्रेम ⟶ शृङ्गाररस।इस प्रक्रिया से स्पष्ट होता है कि बाणभट्ट के यहाँ ललित कला और रसशास्त्र परस्पर सम्बद्ध हैं।बाणभट्ट की कला-दृष्टि भारतीय सांस्कृतिक स्मृति से जुड़ी है। मणि, रत्न, कमल, चन्द्र, वीणा, पुष्प, गन्ध, चन्दन, केयूर आदि केवल वस्तुएँ नहीं, भारतीय सौन्दर्यपरम्परा के सांस्कृतिक प्रतीक हैं।इसलिए बाणभट्ट का वर्णन पढ़ते समय सहृदय केवल किसी प्राचीन राजमहल की कल्पना नहीं करता, वह उस युग की सांस्कृतिक चेतना का अनुभव करता है।हर्षचरितम् की प्रकृति कादम्बरी से कुछ भिन्न है। यहाँ ऐतिहासिक एवं राजकीय जीवन का महत्त्व अधिक है। फिर भी बाणभट्ट अपनी वर्णनात्मक प्रतिभा के माध्यम से राजसभा, नगर, सेना, आश्रम तथा सामाजिक जीवन को कलात्मक बना देते हैं।इसी कारण हर्षचरितम् को केवल राजचरित मानना उचित नहीं होगा। यह तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक जीवनस्य आख्यानम् भी है। संगीत एवं नृत्य के अध्ययन में हर्षचरित से संबंधित आधुनिक शोध में "सङ्गीतगृहम्" जैसे संकेतों को विशेष महत्त्व दिया गया है।

बाणभट्ट की भाषा का सबसे महत्त्वपूर्ण सौन्दर्य यह है कि भाषा स्वयं कला बन जाती है।

दीर्घसमासः ⟶ लय

अनुप्रासः ⟶ ध्वनिसौन्दर्यम्

© Shiksha Samvad | Received: 10 June -2026 | Accepted: 15 June - 2026 | Published:20 June - 2026

उपमा ⟶ दृश्यसौन्दर्यम्

रूपकम् ⟶ कल्पनासौन्दर्यम्

उत्प्रेक्षा ⟶ भाववैचित्र्यम्

रसः ⟶ अनुभूतिसौन्दर्यम्

बाणभट्ट के गद्य में शब्द, अर्थ, ध्वनि, दृश्य तथा भाव का समन्वय होता है।इसी कारण परवर्ती गद्यकारों पर बाणभट्ट का प्रभाव अत्यन्त व्यापक रहा। संस्कृत गद्य के इतिहास में भी बाण की शैली को ऐसी प्रभावशाली दिशा प्रदान करने वाली माना गया है जिसका अनुकरण बाद के अनेक गद्यकारों ने किया।

**निष्कर्ष**

महाकवि बाणभट्ट के गद्यकाव्यों का सम्यक् अध्ययन यह प्रमाणित करता है कि उनकी रचनाओं में ललितकलाः केवलं विनोदस्य साधनानि न सन्ति, अपितु ताः भारतीयसांस्कृतिकचेतनायाः सशक्ताः अभिव्यक्तयः सन्ति। कादम्बरी तथा हर्षचरितम् में सङ्गीत, वाद्य, नृत्य, चित्र, वास्तु, शिल्प, अलङ्कार, प्रसाधन, उद्यान तथा प्रकृति-इन सभी के माध्यम से बाणभट्ट ने अपने समय की कलारुचि एवं सांस्कृतिक समृद्धि का चित्र उपस्थित किया है।कादम्बरी में "वीणावाहकः केयूरकः" जैसे उल्लेख संगीतपरम्परायाः साक्ष्यं ददति। रत्नभित्ति, मणिस्तम्भ, उद्यान तथा पुष्प-विन्यास के वर्णन स्थापत्य एवं दृश्य-सौन्दर्य की विकसित चेतना को व्यक्त करते हैं।सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्ट्या बाणभट्ट की विशिष्टता यह है कि उनके यहाँ वस्तु ⟶ दृश्य ⟶ भाव ⟶ रस की क्रमिक प्रक्रिया दिखाई देती है। वे बाह्यसौन्दर्य को अन्तःसंवेदना से जोड़ देते हैं। उनके लिए पुष्प केवल पुष्प नहीं, शृङ्गार का आलम्बन है; वीणा केवल वाद्य नहीं, भावप्रेषण का साधन है; रत्नभित्ति केवल स्थापत्य नहीं, अद्भुतरस का कारण है और प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं, मानवीय भावों की सहचरी है।अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है-

**"बाणस्य गद्ये कला न केवलं दृश्यते, अपितु अनुभूयते।"**

बाणभट्ट के गद्य में शब्दचित्रण, अलङ्कारवैचित्र्य, रसाभिव्यक्ति, सांस्कृतिक प्रतीक तथा प्रकृति-सौन्दर्य का जो समन्वय मिलता है, वह संस्कृत गद्यकाव्य की अद्वितीय उपलब्धि है। उनकी रचनाएँ साहित्यिक सौन्दर्य के साथ-साथ तत्कालीन भारतीय समाज की सांस्कृतिक स्मृति को भी सुरक्षित रखती हैं।इस दृष्टि से बाणभट्ट केवल संस्कृतगद्यस्य महाकविः न, अपितु भारतीयसौन्दर्यचेतनायाः समर्थ व्याख्याता भी हैं। उनके गद्यकाव्यों में ललितकलाओं का अध्ययन संस्कृतसाहित्य, भारतीयकलाइतिहास तथा सौन्दर्यशास्त्र-तीनों के लिए समान रूप से महत्त्वपूर्ण है।

**संदर्भ ग्रन्थ**

1. बाणभट्ट - कादम्बरी (पूर्वार्ध), पं. कृष्णमोहन शास्त्री, चौखम्भा/उपलब्ध संस्कृत-हिन्दी संस्करण, वाराणसी,701 पृ.55।

2. बाणभट्ट - हर्षचरितम्, संस्कृत मूलपाठ एवं हिन्दी टीका, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 2008,पृ. 75।

3. वाचस्पति गैरोला -संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1978, पृ. 735।

4. आचार्य बलदेव उपाध्याय - संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा मन्दिर, वाराणसी,1973, पृ. 260।

5.डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' - संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी, 2023, कुल 614 पृष्ठ, बाणभट्ट एवं गद्यकाव्य-विषयक विवेचन पृ. 370।

6. डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी - संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,2001, पृ.365।

7. ए. बी. कीथ - संस्कृत साहित्य का इतिहास, अनुवादक मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1967, पृ.285 ।

8. वाचस्पति गैरोला - संस्कृत साहित्य तथा संस्कृति, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 2009, पृ.505 ।

## Cite the Article:

**सिंह, डॉ.शालिनी, बघेल, सरोजिनी. (2026). महाकवि बाणभट्ट के गद्यकाव्यों में ललित कलाओं का सांस्कृतिक एवं सौन्दर्यशास्त्रीय स्वरूप.** Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 3(4) 740-745, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, June-2026. **DOI: -** https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.80

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

# CERTIFICATE

## of Publication

***This Certificate is proudly presented to***

**डॉ.शालिनी सिंह[1], सरोजिनी बघेल[2]**

**For publication of research paper title**

**महाकवि बाणभट्ट के गद्यकाव्यों में ललित कलाओं का सांस्कृतिक एवं सौन्दर्यशास्त्रीय स्वरूप**

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026, Impact Factor-RPRI-3.89/6.69

**Dr. Neeraj Yadav**
**Editor-In-Chief**

**Dr. Lohans Kumar Kalyani**
**Executive-chief- Editor**

**Note:** This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

**DOI: -** https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.80